बांग्लादेश में हिन्दू विरोधी दंगों पर 'आँसू' बहाये संघी दंगाइयों ने

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते दिनों बांग्लादेश में हुए हिन्दू विरोधी दंगों को लेकर देश भर में आरएसएस संगठनों द्वारा जहां-तहाँ प्रदर्शन के क्रम में एक छोटा सा प्रदर्शन बीके चौक और एनआईटी एक-दो नंबर चौक पर भी दिनांक 23 अक्टूबर को किया गया। प्रदर्शनकारियों की सीमित संख्या को देखते हुए समझा जा सकता था कि कुछ संघी-भाजपाई ही उक्त राजनीतिक नौटंकी में मगरमच्छ के आँसू बहा रहे थे।

शायद आम लोगों ने समझ लिया है कि इन संघियों को बांग्लादेशी हिंदुओं एवं उनके मंदिरों से कुछ भी लेना-देना नहीं है, इनका मकसद तो केवल प्रतिक्रियास्वरूप यहाँ भी दंगे भड़काना है। यानी वहाँ के दंगों की आड़ में यहाँ मुसलमानों व उनके धार्मिक व व्यापारिक स्थलों पर हमले, लूटपाट व आगजनी की जाए। लेकिन आम जनता इनकी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के बहकावे में आती प्रतीत नहीं हो रही। समझने वाली बात यह है कि बांग्लादेश सरकार ने कट्टरपंथी दंगाइयों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करते हुए करीब 700 दंगाइयों को जेल भेज दिया है। वहाँ की पुलिस ने कोमिला शहर के उस दंगाई को भी ढूँढ कर गिरफ्तार कर लिया जिसने एक दुर्गा पूजा के पंडाल में घुस कर दुर्गा मूर्ति के नीचे कुरान शरीफ रखकर उसकी बेहूरमती (अपमान) की अफवाह फैला दी, जिसके इंतजार में कट्टरपंथी दंगाई पहले से ही खून-खराबे की पूरी तैयारी किये बैठे थे।

सुधी पाठक संदर्भवश जान लें कि बांग्लादेश में कट्टरपंथी जमात-ए-इस्लामी के मुकाबले वाली शेख मुजीबुर्रहमान की पार्टी अवामी लीग आज सत्तारूढ़ है। जमात-ए-इस्लामी, भाजपा एवं संघियों की तर्ज पर जनता को धर्म की अफीम चटा कर राज करने में विश्वास करती है। दोनों ओर के इन कट्टरपंथियों को एक-दूसरे का पूरा सहारा है या यूं कहें कि दोनों एक-दूसरे की खुराक हैं, एक के बिना दूसरे का गुजारा नहीं। दोनों को ही एक-दूसरे के देश में दंगे होने का इंतजार रहता है ताकि प्रतिक्रिया स्वरूप इन्हे भी 'धंधा' करने का मौका मिले।

आवामी लीग की नेता शेख हसीना ने न केवल मौजूदा दंगों से निबटने में पूरी सख्ती बरती है बल्कि पहले भी उनकी सरकार कई कट्टरपंथियों को फांसी पर लटका चुकी हैं। बांग्लादेश में सांप्रदायिक जहर फैलाने वालों को मंत्रियों द्वारा फूल मालाएं नहीं पहनाई जाती न ही 'गोली मारो सालों को' जैसे भड़काऊ नारे लगाने वालों को केन्द्रीय मंत्री मण्डल में पदोन्नत किया जाता है। इसके अलावा न ही वहाँ डॉ कफील और शरजिल इमाम जैसे अल्पसंख्यकों को जेलों में ठूसा जाता है और न ही योगी सरकार से प्रेरित होकर मंदिरों को तोड़ा जाता है। पकिस्तान में भी सरकार द्वारा ऐसे गंदे एजेंडे प्रायोजित नहीं किये जाते हैं। इन दोनों ही देशों में जब भी कट्टरपंथी इस तरह की कोई गंदी हरकत करते हैं तो वहाँ की सरकारें बड़ा नोटिस लेते हुए मंदिरों का निर्माण एवं मरम्मत आदि सरकारी खर्च पर कराती हैं। इसके विपरीत उत्तर प्रदेश में योगी के बुलडोजर मुसलमानों के घर एवं धार्मिक स्थल ध्वस्त करने में जुटे रहते हैं। इतना ही नहीं योगी तो मुस्लिम महिलाओं को कब्रों से निकाल कर बलात्कार करने जैसे प्रलापों को प्रोत्साहित करते हैं।

क्या संघियों की इन गंदी और ओछी हरकतों की प्रतिक्रिया पड़ोसी दोनों मुस्लिम देशों के अलावा अन्य मुस्लिम देशों में नहीं होगी? दरअसल, संघियों की इस ओछी राजनीति के चलते इस्लामिक देशों में बसे या काम करने गए हिंदुओं की जान-माल के लिए बड़ा भारी संकट खड़ा हो जाता है जिसकी चिंता वोट के ध्रुवीकरण को आतुर संघियों को नहीं होती।

त्रिपुरा में 15 मस्जिदो में तोड़फोड़ हुई । 3 मस्जिदें पूरी तरह से ध्वस्त कर दी गयी। मुसलमानो के घर जलाए गए । उनकी दुकाने लूट ली गयी। मुसलमानो से खुले आम मारपीट चल रही है ।

दो CPIM के ऑफ़िस जला दिए गए । मीडिया हाउस पर अटैक हुआ , वहाँ तोड़फोड़ हुई । कई लोग ज़ख्मी है । CCTV की क्लिप सोशल मीडिया पर चल रही है । जगह जगह आगज़नी हो रही है ।

यह सब एक हफ़्ते से चल रहा है । किसी टीवी चैनल पर न्यूज़ नहीं है । किसी नेता का इस पर कोई ट्वीट नहीं है । अभी तक इतनी सारी घटनाओं में एक भी गिरफ़्तारी नहीं हुई है ।

क्या त्रिपुरा भारत में नहीं है ?

खबर मरम्मत

– जुम्मन मियां पंक्चर वाले

अयोध्या की भी सैर कर सकेंगे दिल्लीवासी सरकारी खर्चे पर

दिल्ली सरकार की (मुफ्त) तीर्थयात्रा योजना के के अन्तर्गत अब अयोध्या की भी यात्रा की जा सकेगी। दिल्ली सरकार ने बीते बुधवार को कैबिनेट मीटींग में यह प्रस्ताव पास किया है। इस योजना के अन्तर्गत सरकार दिल्ली के सीनियर सिटिजन्स को नौ स्थानों की मुफ़्त यात्रा करवाती है। इनमें अमृतसर, उज्जैन, शिरडी, जम्मू, द्वारका, तिरुपती, रामेश्वरम, हरिद्वार और बोध गया शामिल थे। दसवां शहर अयोध्या इस यात्रा के लिये और चुना गया है। ध्यान रहे कि मुस्लिम और इसाईयों के कोई पवित्र स्थान इस सूची में शामिल नहीं है लिहाजा उनको भी अपने 'खुदा' या 'गॉड' के दर्शन करने हैं तो उन्हें भी इन्ही तीर्थ स्थानों पर जाना पड़ेगा।

ध्यान रहे कि इससे पहले तेलंगाना की सरकार भी नरसिम्हा स्वामी के मन्दिर के लिये रिजर्व बैंक से 125 किलो सोना खरीदने की बात कह चुकी हैं। यानी भारत में धर्मनिरपेक्षता सिर्फ संविधान के प्रस्तावना में लिखने भर की वस्तु रह गई है। साथ ही भारत के संविधान की धारा 51 (ए) (एच) का भी खुला उल्लंघन हो रहा है जो नागरिकों में वैज्ञानिक मानसिकता विकसित करने को कहती है। क्या ये धर्म के नाम पर वोट मांगना नहीं है? क्या भारतीय चुनाव आयोग इसका संज्ञान लेगा? क्या सुप्रीम कोर्ट इस तरफ़ नजरें घुमायेगा जो अपने आप को संविधान का रक्षक कहते नहीं थकता।

एक और लाइन लगाओ भाई

हरियाणा में फ़सलों के लिये खाद की भारी कमी के चलते सरकार ने पुलिस थानों से खाद वितरण करना शुरू कर दिया है। उसके लिये पुलिस थानों के सामने लम्बी लाइनें लगनी शुरू हो गई है। सुबह से ही, महिलाओं और बच्चों समेत, किसानों का पूरा परिवार थानों के सामने लाइन में खड़ा होने को मजबूर है।

अस्पतालों के सामने लाईन, बिजली दफ़्तरों के सामने लाईन, तरह-तरह के कार्ड बनवाने आदि के लिये तो आपने लाईन लगती पहले भी देखी होगी। कुछ महीने पहले श्मशान घाटों पर भी चिता के लिये मुर्दों को लाईन में लगाते आपने देखा होगा। पर अब पुलिस थानों के सामने भी लगी लाइनों को देख कर चिंता होती है कि क्या देश वाकई उन्नति कर रहा है। क्या वाकई आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के लिये भी लाईनों में लगना पड़ेगा?

जज साहिबा गरजी तो खूब पर बरसी नहीं

दिल्ली हाई कोर्ट की जज साहिबा मुक्ता गुप्ता ने एक केस में यूपी पुलिस को खूब लताड़ लगाई। दरअसल दिल्ली के एक व्यक्ति ने यूपी की एक युवती से प्रेम विवाह कर लिया ओर दिल्ली में रहने लगे। लड़की के घर वाले, जो इस विवाह के खिलाफ़ थे उन्होंने यूपी पुलिस में रिपोर्ट लिखा दी। यूपी पुलिस दिल्ली आई और लड़के के न मिलने पर उसके भाई और बाप को गिरफ़्तार करके ले गई। इस पर लड़के वालों ने दिल्ली हाईकोर्ट में गुहार लगाई तो जज ने यूपी पुलिस को तलब किया और कहा कि ये गैरकानूनी हरकतें आप यूपी में करते होंगे, दिल्ली में हम ऐसा नहीं होने देंगे।

विदित हो कि लड़का-लड़की दोनों बालिग है। एफआईआर में भी लड़की की उम्र 21 साल लिखी है। लेकिन फिर भी यूपी पुलिस दिल्ली में आकर उनकी गिरफ़्तारी की कोशिश करती है और वो भी बिना दिल्ली पुलिस को बताये। और दो लोगों को गिरफ़्तार करके ले भी जाती है। जाहिर है इसमें पैसे का खेल तो है ही। इससे पहले दिल्ली से यूपी पुलिस द्वारा इसी तरह एक पत्रकार को गिरफ्तार करने पर सुप्रीम कोर्ट ने खूब लताड़ लगाई थी लेकिन किसी पुलिस वाले को अन्दर नहीं किया। जाहिर है ढीठ यूपी पुलिस को लताड़ से कोई फ़र्क नहीं पड़ता उसे तो कोई लतियाने वाला चाहिये।

गृहमंत्री विज को छुपे हुए गद्दारों की तो चिंता है परन्तु खुले घूमने वालों से नहीं

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

हरियाणा के गृह मंत्री अनिल विज ने देश में छुपे हुए गद्दारों से सचेत रहने की चेतावनी दी है। उन लोगों से सावधान रहने को कहा है जो पाक क्रिकेट टीम के जीतने पर पटाखे फ़ोड़ते हैं। उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि ऐसे लोगों का डीएनए भारतीय नहीं हो सकता। विज के इस कथन पर बहस करने से पूर्व यह समझना ज्यादा जरूरी है कि उन छुट्टे घूमते गद्दारों का क्या करें जो स्वतंत्रता संग्राम के वक्त अंग्रेज हुक्मरानों के तलवे चाट रहे थे। अंग्रेज हुकूमत से मोटी-मोटी पेंशनें पा रहे थे? जब पूरा देश जाति व धर्म को भुला कर देश की आज़ादी के लिये लड़ते हुए अपने प्राणों का बलिदान दे रहे थे, उस समय खाकी निकर पहन कर अंग्रेजों की सेवा में हाज़िर थे उन्हें विज महाशय कौनसी श्रेणी में रखना चाहेंगे।

जब देश के लिये तिरंगे झंडे का निर्माण हुआ तो उस वक्त तीन रंग वाले झंडे को अपशकुन बताने वाले रंगे सियार जो आज तिरंगा ही तिरंगा चिल्ला रहे हैं, वे कब से देशभक्त हो गये? जो फ़ासीवाद की दीक्षा लेने इटली के फ़ासीवादी तानाशाह मुसोलिनी के चरण स्पर्श करने इटली तक पहुंचे थे, वे मुंजे साहब कैसे देशभक्त एवं देश के शुभचिंतक हो सकते हैं?

संदर्भवश यह जानना अत्यधिक जरूरी है कि देश का अर्थ क्या है, देश शब्द से समझा क्या जाये, जिसकी भक्ति को लेकर इतना बावेला मचा है? देश केवल कोई भूखंड नहीं होता, बल्कि उस भूखंड पर रहने वाले लोगों से बनता है। इस लिये भक्ती एवं सेवा उस भूखंड पर बसे लोगों की होनी चाहिये। परंतु चंद फ़ासीवादी लोगों का गिरोह जो उस भूखंड पर बसे लोग़ों को लूटने, पीटने एवं हर तरह से प्रताड़ित करने में लगाा है वहीं अब देशभक्ती के प्रमाणपत्र बांटने में लगा है; यानी जो लोग खुद देश से गद्दारी करते रहे, अंग्रेज लुटेरों को सहयोग करते रहे, आज वही देशभक्ती के ठेकेदार बन बैठे।

अब थोड़ी क्रिकेट की भी बात कर ली जाये। भारत के हारने पर, विज जैसों को पटाखे फूटते कहां से नज़र आ जाते हैं और केवल उन्हीं को क्यों नज़र आते हैं? दूसरी ओर टीवी स्क्रीन पर खुशी से खिलखिलाता एवं चहकता कनेडा कुमार (अक्षय कुमार) क्यों नज़र नहीं आता? वह भारत की हार पर इतना खुश होकर भी देशभक्त कैसे बना हुआ है? टीम का कप्तान कोहली जब खुशी-खुशी पाकिस्तानी कप्तान से गले मिल कर बधाई देता है तो उसके डीएनए में कोई दोष क्यों नहीं दिखता इन रंगे सियारों को? असल में इन्हें दिखता तो सब कुछ है परन्तु इनका असली एजेंडा तो हिन्दू-मुस्लिम है। इन्हें इस बात से बेहद तकलीफ़ है कि उनके द्वारा इतना जहर उगले जाने के बावजूद अभी तक सड़कें खून से लाल क्यों नहीं हो पा रही? यूपी के चुनाव सिर पर हैं, यदि दंगे न हो पाये तो मुख्यमंत्री अजय सिंह विष्ट की नैया कैसे पार लगेगी?

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06